

आपदा प्रबंधन का सेंदाई फ्रेमवर्क

आपदा प्रबंधन के याकोटमा रणनीति हो सेंदाई फ्रेमवर्क के माध्यम से विकसित कीया गया तथा विश्व में आपदा से सम्बाधित लोगों को बचाने के लिए सेंदाई फ्रेमवर्क ^{क्षियापा} वैभवशिल अनिसके 7 लक्ष्य हैं जिसे निम्नलिखित विदुओं की सहायता से समझा जा सकता है।

2015 में भारत के ऐंडाई शहर में UND का आपदा प्रबंधन से सम्बंधित तीसरा विश्व स्तरी सम्मेलन आयोजित किया गया इस सम्मेलन में आपदाओं के प्रभाव को कम करने का विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया गया।

आपदा जोखिम न्यूनिकरण को सेंदाई रूप रैबा के कार्य हेतु व उद्देश्य के रूप में आपदा के व्यापकता के संदर्भ में प्रबंधन की रणनीति डापनाने

ते हैं यह रूप या होठे स्वर और
वे स्वर पर निपत्ति और कम्ही और अन्यका
या बीमी गति से युक्त होने तकी आपदा,
प्राकृतिक या गान्धी जनित ज्ञातरों के साथ-2
कीविम तकनीकी और जैविक स्तरों के
जौविम पर लाए होगी इसका उद्देश्य
ज्ञाती स्तरों पर विकास में आपदा
जौविम तक साधा भितरी व बाहरी
सर्वी दृष्टी से विभिन्न ज्ञातरों के
प्रबंधन को निरूपित, करना है।

1) वर्ष 2030 तक वैश्विक राजन बैलू
उत्पाद गे प्रगति आपदा जौविम
जाति को कम करना।

आपदार्थ वृद्धि सत्तु पर
जौविम उत्कर्ष करके G.D.P की
जाति करनी है जिसके कारण जटी

एक तरफ देश का आर्थिक नुस्खा
तोता है वहीं दूसरी तरफ अन्य
समस्याएँ जम्म लेती हैं अतः आपदाओं
से GDP में होने वाली सार्वति को
कम करना है।

3) 2030 तक वैश्विक आपदा मूल्य दृढ़
को पर्याप्त रूप द्वारा कम करना।
2020 - 2030 के बीच औसतन प्रति
1 लाख वैश्विक मूल्य के दर को
कम करने का लक्ष्य।
इस काम के लिए तकनीकी का
विकास मुख्याओं का आदर्श-प्रदान
आपदा प्रबंधन की रणनीति को प्रभावी तरीके
से लानु करना, इत्यादि तरीकों से
यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता
है।

3) 2030 तक नौगों की विभिन्न
घटाड़ के घरें के पूर्व प्राप्ति।

की उपलब्धता और आपदा ~~→ X~~
जोखिम के उपार्जों में तीव्र वृद्धि ।

4) 2020 तक राष्ट्रीय और स्थानीय
आपदा की जोखिम में कभी की
रानीति बनाने वाले देशों की संख्या
में वृद्धि कर्भा ।

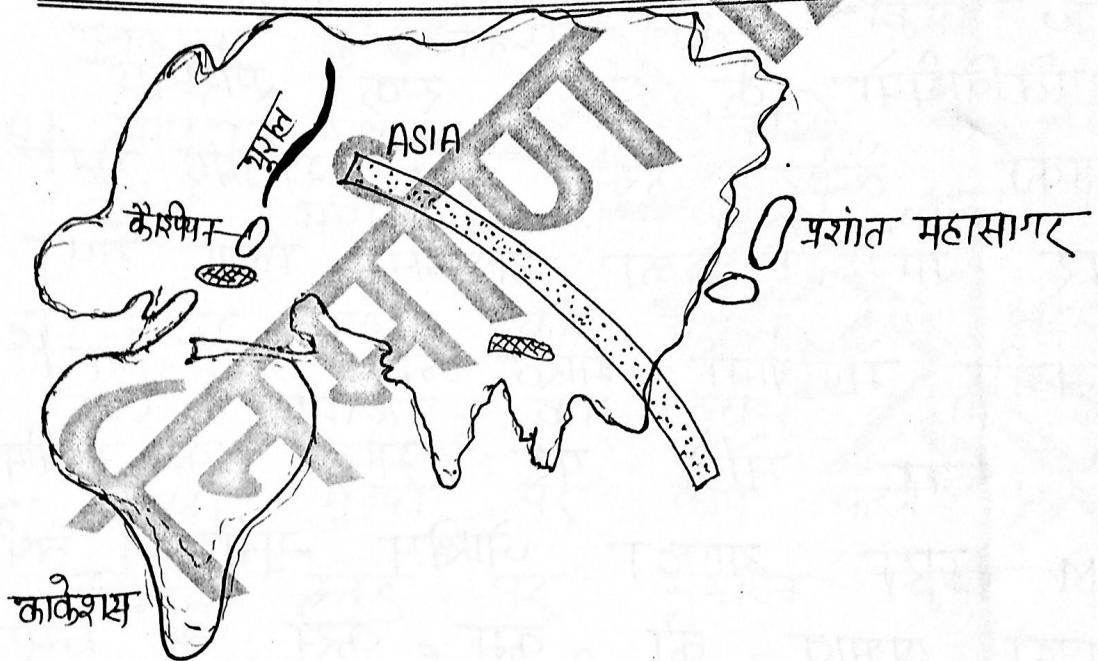
5) पर्याप्त और स्वतं समर्पण के माध्यम
से इस रूप-रिक्त के कार्पन्कार के
सिर वर्ष 2030 तक अपने राष्ट्रीय
कार्य योजनाओं की इसका दूसरे बनाने
के लिए विकासशील देशों से पर्याप्त
अंतर्राष्ट्रीय सहयोग ।

6) वैश्विक स्तर पर तर्फ 2030 तक
आपदा से प्रभावित क्षेत्रों की सं-
में कभी लाना क्योंकि आपदा पूर्ण
स्तर पर क्षेत्रों की प्रभावित करती
है ।

7) विकास के माध्यम से वर्ष 2030 तक
महत्वपूर्ण आधार-भूत ढांचे तथा बुनियादी
सेवाओं में आपदा से बचने वाले व्यवधान
में पर्याप्त कमी लाना।

[बुनियादी खुलियाड़ी में शिक्षा और स्वास्थ
महत्वपूर्ण है]

सशीर्याई मंत्री-स्तरी सम्मेलन [आपदा योग्यवंधन हेतु-2016]



शाश्वत जोड़ रैशिया प्रैसिफिक के देश के
प्रकार के आपदाओं से यथावित जैसे
इस देश में सुनामी, बाढ़, भूष्टमरी
बुकंप, सूखा तथा आंतकवाद जैसी

सभी देशों को एक मैच पर आकर
आपदा के घेबंधन ठेक व्यापक रणनीति
वाने की आवश्यकता है इसी क्रम में
भारत ने नवम्बर 2016 में ~~एशियाई~~ तथा
एशिया पैसिफिक देशों के ~~लिए~~ आपदा
जोखिम न्यूनीकरण मुद्यता आपदा पूर्व
गतिविधियों के ~~सिर~~ सक एशियाई
घाका हैं यार करने हेतु एशियाई सेटी
स्तर सम्मेलन का आयोजन किया गया
जिसकी मेजबाजी भारत ने किया था।
और इस मौके पर भारत के मानीय
P.M द्वारा आपदा जोखिम न्यूनीकरण तथा
आपदा प्रभाव को कम करने के लिए
10 शूली कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया
जो कि ~~निर्णालीष्टि~~ है।

1) सभी विकास छोटे के कार्यक्रमों में
आपदा जोखिम पंखों के अपनाया जाय

- ~~2) गरीब परिवार के लिए आपदा के लिए या जीवित को कम करने का प्रयास तथा साध ही साध अमीरवर्ग के लोगों को भी आपदाओं से बचाने का प्रयास ।~~
- ~~3) विश्व स्तर पर लिए गए असंधिंग के लिए निवेश किया जाए ।~~
- ~~4) आपदा प्रबंधन में महिलाओं के नेतृत्व और मानीदारी की बढ़ाया जाए ।~~
- ~~5) आपदा प्रबंधन की दक्षता को बढ़ाने के लिए तकनीकी का लाभ उठाया जाए ।~~
- ~~6) आपदा मुद्दों पर काम करने के लिए वि.वि.स्टड पर प्रयास किया जाए । तथा शोध के लिए वि.वि.वि. का नेतृत्वकी तैयार किया जाए ।~~
- ~~7) स्कॉल मिडिया व मीडिया तकनीकी द्वारा दी गयी सुविधाओं का बेहतु उपयोग किया जाए ।~~

8) स्थानीय समता के विकास व निर्माण के लिए प्रभावी तरीके से यह किया जाए क्योंकि स्थानीय स्तर पर आपदा प्रबंधन को प्रभावी बना कर आपदा के प्रभावों को कम किया जा सकता है।

9) किसी भी आपदा से ~~स्थिरीकृत~~ स्थिरीकृत का मौका नहीं गवाना चाहिए क्योंकि प्रत्येक आपदा कोई जन कोई सीब व सषक देती है यहां इन आपदाओं से सीख लेते हुए प्रबंधन को प्रभावी किया जा सकता है।

10) आपदाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरौप्य में अधिक से अधिक सामंजस्य और सहयोग होना चाहिए क्योंकि बिना सामंजस्य और सहयोग के ~~अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरौप्य~~ नाहीं हो सकता है।

आपदा अंबंधन हेतु BRICS देशों का सम्मेलन

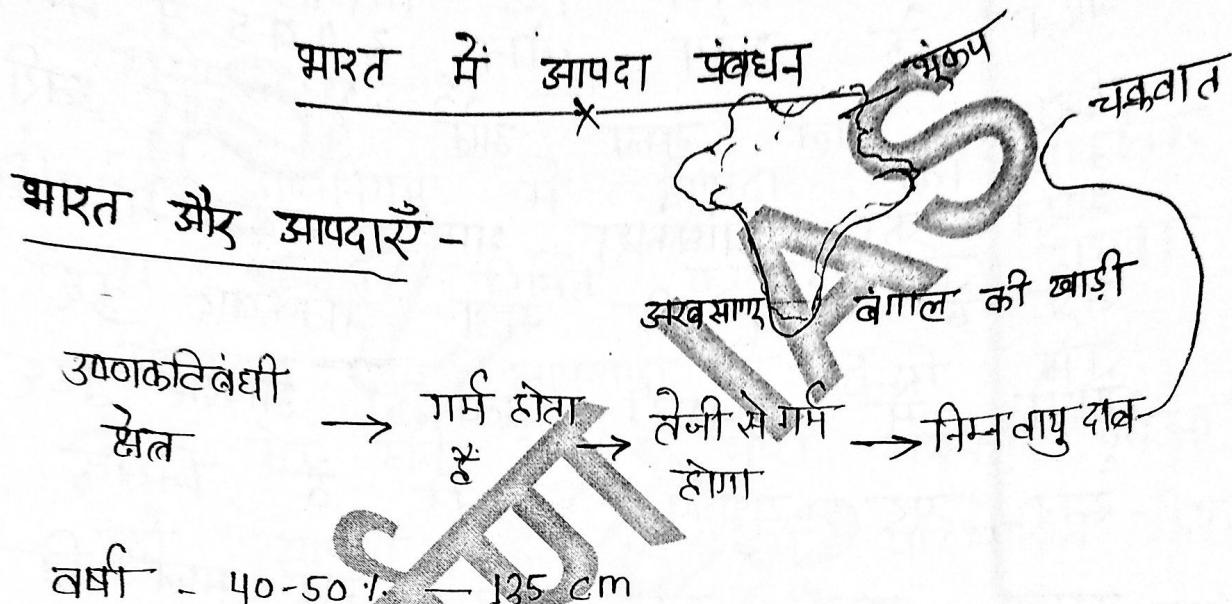
आपदा के अंबंधन हेतु BRICS देशों का सम्मेलन 22-23 Aug 2016 में (भारत) आयोजित किया गया जिसमें इन देशों के बीच आपदा अंबंधन की रणनीति का विवरण दिया गया। इस सम्मेलन के दौरान आपदा अंबंधन की गारंटी तथा अप्रैल अंत में भारत द्वारा दिया गया इस अंबंधन का नाम था "उदय-शुक्र पूर घोषणा" जिसे निम्न विंदुओं के महत्व दिया गया।

1) BRICS देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय टारक फोर्स के गठन पर सहमति बर्ती है तथा यदि [इस टारक फोर्स का गठन हो गया तो यह टारक फोर्स वृहद् आपदा - अंबंधन के कार्यों पर सहायता कर सकती है तथा लोगों

को आपदा भी के अभाव से प्रहर ल्त
पर बचाया जा सकता है ।

- 2) आपदा घेंघन के लिए विभिन्न देशों के
बीच नियमित चर्चा, विनिमय, आपसी सहायता
एवं आपसी सम्बन्ध ढौंडा चाहिए ।
- 3) आपदा घेंघन हेतु विशेष लंबाई पर
झुक्कल भागीदारी टैगड करने पर जोर
देते हुए स्कीव्हूट दृष्टि कोण का विकास
करना ।
- 4) समुद्रप आधारित आपदा घेंघन को बढ़ावा
दिया जाए जिससे स्पष्ट नीतिया सर्व^{योजना} का विषयादान किया जाए ।
- 5) सभी द्वीपों में आपदा घेंघन हेतु समता
का विकास किया जाए ।
- 6) पूर्व में नेहर गर्स प्रयासी का विशेषज्ञ
करना कमीओं को दूर करना तथा
गलतिथों से सीधते हुए अभावी घेंघन
की नीतिया टैगड करना ।

7) आपदा प्रबंधन हेतु बहु क्षेत्रिक समिक्षा
की चाहिए।



भारत के भौगोलिक स्थिति को यादि देखा जाए तो भारत तीन तरफ से जलीय भाग से छीरा हुआ है इसी कारण से भारत की तट रेखा लम्बी है तथा भारत उच्चाकृतिवंधी क्षेत्र में भी स्थित है अतः तटवर्ती क्षेत्रों में अपकू सर पर उच्चाकृतिवंधी चक्रवात डापना प्रभाव दिखाती है साध ही साध भारत

ले 381. लेख में वर्षा 75cm के कम होती है अतः इन देशों में युवा का प्रभाव व्यापक होता है इसी तरह भारत के शुक्रपूर्ण जोन 3, 4, 5, 6 में अधिक विविधता वाले मूकप मात्र हैं और उत्तरी भारत का अधिकांश भाग बाहर से प्रभावित होता है याथ ही साथ आतंकबाद बढ़ता है ये युवामरी इत्यादि आपदाएँ बढ़ती हैं जिसके स्तर पर प्रभावित करती हैं जान-माल की कारण बढ़ते स्तर पर जान-माल की स्थिति होती है तथा यदि भारत को आपदा के क्षेत्र में विशेष परिदृष्टि पर देखा जाए तो यह आपदा प्रभावी देशों में सामिल है तथा इसीपाठ में चीन के पश्चात् आपदाओं के द्वारा बढ़ते स्तर पर प्रभावी दूसरा देश है अतः भारत में आपदा संबंधित की शिक्षात्मक का डेना आवश्यक है इसी

सरकार
शावश्यकता को देखते हुए भारत
में 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम
की घोषणा की जिसकी निम्नलिखित
विशेषताएँ हैं -

- i) इस अधिनियम में आपदा की प्राकृतिक
या मानव निर्मित कारणों से अद्वा
दुर्घटनावश या लापरवाही से किसी भी
स्थेष्ठ में होने वाली भारी विपत्ति दुर्घटना
को आपदा के रूप में परिभाषित किया
जायगा तथा इन आपदाओं को नकरात्मक
रूप में परिचालित बिधा जाएगा अतः
इन आपदाओं के प्रबंधन के लिए
आपदा तैयारी व्यापक स्तर पर होना
चाहिए।

- ii) यह अधिनियम राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन
प्राधिकरण की स्थापना करता है (NDMA)
इसके अतिरिक्त एक राष्ट्रीय कार्यकारी
समीति की स्थापना करता है जिसका

कार्य क्षिप्रान्वयन करना है। इसी स्थिति

पर राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

SDMA तथा जिला स्तर पर जिला

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की व्यापता की
गयी है। SDMA का अध्यक्ष D.M होता
है।

(iii) जिला स्तर पर आपदा प्रबंधन की
नीतियों को बेहतुर तरीके ये लाए
करने के लिए D.M के लिए
अधिनियम में विशेष शाक्तियों का
उल्लेख किया गया है और इन
शाक्तियों की सहायता से D.M हर
स्तर पर प्रबंधन की रणनीति ओट
क्षिप्रान्वयन करता है।

iv) किसी भी आपदा के प्रबंधन हेतु
ऐसका फॉर्म की आवश्यकता होती है
जितना इस अधिनियम में भारत सरकार
द्वारा NDRF के गान का प्रावधान

किया

गया

है

यह

H.D.M.A

अर्थात्

आते

हैं।

v)

आपदा के प्रबंधन में आर्थिक समस्या
 महत्वपूर्ण समस्या है अतः सरकार इसके
 लिए अलग से आर्थिक समिति या
 बजट का प्रावधान करती है यह
 प्रावधान शास्त्रीय स्तर से लेकर पंचायत
 स्तर तक हो सकता है।

~~राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नीति - २००९~~

- i) मुक्कप जोन ३, ४, ५ में ऊची-२ विल्डिंगों
 के निर्माण पर प्रतिबंध लगाया जाए
 तथा पुरानी जीवनदायी इमारतों की
 बुद्धि स्तर पर मरम्मत की जाए।
 [जीवनदायी इमारतें अस्पताल, स्कूल, रेलवे मवा]
- ii) भारत में आपदा प्रबंधन राष्ट्रीय स्तर
 से लेकर जिला स्तर से लेकर पंचायत
 स्तर तक किया जाता है अतः
 सभी स्तरों तक सूचना का आवाय

प्रदम होमा चाहिए इसके लिए राज्य सर्कार द्वारा घोषित गमक कूपा
एवं तथा लैन्ड सरकार द्वारा घोषित गमक कूपा
प्रानी का विकास होमा चाहिए जिसे
प्रबंधन को प्रभावी कराया जा सके ।

स्थानीय
नीतियों
धर्म.
स्तु पड़ आपदा खेदम् की
में सेषिय सेस्कृति को भी
में रखा चाहिए ।

आपदा पश्चात् प्रबंधन की तुलना में
आपदा के पहले की तैयारियों पर
विशेष ह्यजन दिया जाए ।

आपदा प्रबंधन में राष्ट्रीय स्तु पड़
कार्पोरेट सेक्टर गेर सरकारी संगठनों
संघ मीडिया के साथ घनिष्ठ संबंध
स्थापित करते हुए आपदा रोकथाम
संवेदन शीलता को कम करने का
प्रयास करा ।

सभी राज्यों में आपदा प्रबंधन

नियमावली

आपदा प्रबंधन के लाए जाएं

में सत

विकास की लाइ नक्या

तथा

नियोजन के लाए जाएं

आपदा

विकास के लाए जाएं

नक्या

प्रबंधन के नियमों को लाए

जारी करा

आपदा प्रबंधन में फैचायत की भूमिका

कोई भी आपदा जनसांख्यिकी के लिए

नकारात्मक होती है क्षेत्रीय आपदाएँ

हाइड्रोटर्मिक पद मानव की आर्थिक

राजनीतिक सांस्कृतिक सामाजिक हाति करती

है किंतु इन आपदाओं को हड्डी

तरह से रोक पाना सम्भव नहीं

है किंतु विशेष तैयारी करके प्रबंधन

के तरीके के द्वारा अपना कर आपदा

के प्रभाव को कम किया जा सकता है इसलिए

जारी करा

जारी करा

जारी करा

जारी करा

जारी करा

पंचायते महत्वपूर्ण श्रमिका नियाती है
जिसे बिन्दु किंतु जो से समझा जा
सकता है।

आपदा पंबंधन से स्थानीय लोगों
की श्रमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती
है अतः पंचायते स्थानीय सरद पर
कार्यबल तैयार कर शकती है।

पंचायते स्थानीय सरद पर आपदा के
पंबंधन से सम्बंधित वार्षिक योजनाओं को
हैयार कर सकती है।
पंचायते वार्षिक बजट तैयार कर शकती
है आपदा पंबंधन हेतु।

पंचायतों के द्वारा हृद्द सरद पर
समुदाय आघादित पंबंधन को लागू
किया जा सकता है।

पंचायतों के पास प्राकृतिक अंकर में
सशायता करने की हमता होती है।

पंचायत सर्वोच्च आयिको को मैगानित कर
सकती है और सामुदायिक अंतर पर

पंबंधन कर सकती है।

आपदाओं के समय संरामिक व्यावरण का
राहत कार्य पंचायत वृद्धि अंतर पर

करती है।

पंचायतों को अपने स्वामी जनकादि होती है
मेरी लाभगत सभी आपदा के व्यापक समावेश हैं।

अतः पंचायतों आकड़ा तैयार कर सकती है जिससे
का पंबंधन प्रभावी हो जायेगा।

पंचायत लोगों के सर्वोच्च अमेर के
सिर कार्य आसानी से तैयार करके राहत

का पंचायती बना सकती है।